

संन्यासविधिना कालं कृत्वासौ शल्यवर्जितः। स्वर्गलोकं समासाद्य देवो जातो महर्द्धिकः ॥१४॥
 तत्र भोगान्सुभुञ्जानः स्वर्गलोकसमुद्भवान्। कुर्वन्यात्रां जिनेन्द्राणां महास्वर्णाचलादिषु ॥१५॥
 साक्षात्तीर्थकरानुच्चैः केवलज्ञानलोचनान्। चारुदत्तचरो देवः समभ्यर्चत्सुभक्तितः ॥१६॥
 शृण्वन् जैनेश्वरीं वाणी-माप्तेभ्यः शर्मदायिनीम्। इत्यादिधर्मसंसक्तः स देवः सुखतःस्थितः ॥१७॥
 श्रीमत्सारसुरेन्द्रचन्द्रनिकरैर्नागेन्द्रसत्खेचरैः षट्खण्डाधिपभूचरैश्च नितरां भक्त्या सदाभ्यर्चितम्।
 धर्मं श्रीजिनभाषितं शुचितरं स्वर्गापवर्गप्रदं नित्यं सारसुखाय शर्मनिलयं सन्तः श्रयन्त्वञ्जसा ॥१८॥
 इति कथाकोशे चारुदत्तकथा समाप्ता।

३६. पाराशरकथा

नत्वा श्रीमज्जिनं देवं ज्ञातुं चान्यमतं सताम्। वक्ष्ये पाराशरस्याहं कुमुनेर्लौकिकी कथा ॥१॥
 हस्तिनागपुरे पूर्वं गंगादिभटधीवरः। एकदासौ महामत्सीं धृत्वा जालेन पापधीः ॥२॥
 तां निहन्ति यदा तावत्तस्याः कुक्षेर्विनिर्गता। कन्यासद्रूपसंयुक्ता महादुर्गन्धविग्रहा ॥३॥
 तेन सत्यवतीत्युक्त्वा पोषिता धीवरेण च। हा कष्टं दुर्दृशां शास्त्रं सर्वमेतदसत्यकम् ॥४॥

पर वह निराश नहीं हुआ और काम करता ही चला गया। अपने उद्योग से उसके भाग्य का सितारा फिर चमक उठा और वह आज पूर्ण तेज प्रकाश कर रहा है। इसके बाद चारुदत्त ने बहुत वर्षों तक खूब सुख भोगा और जिनधर्म की भी भक्ति के साथ उपासना की। अन्त में उदासीन होकर वह अपनी जगह पर अपने सुन्दर नाम के पुत्र को नियुक्त कर आप दीक्षा ले ली। मुनि होकर उसने खूब तप किया और आयु के अन्त में संन्यास सहित मृत्यु प्राप्त कर स्वर्ग लाभ किया। स्वर्ग में वह सुख के साथ रहता है, अनेक प्रकार के उत्तम से उत्तम भोगों को भोगता है, सुमेरु और कैलाश पर्वत आदि स्थानों के जिनमन्दिरों की यात्रा करता है, विदेहक्षेत्र में जाकर साक्षात् तीर्थकर केवली भगवान् की स्तुति-पूजा करता है और उनका सुख देने वाला पवित्र धर्मोपदेश सुनता है। मतलब यह कि उसका प्रायः समय धर्म साधन में बीतता है और इसी जिनभगवान् के उपदेश किए निर्मल धर्म की इन्द्र, नागेन्द्र, विद्याधर, चक्रवर्ती आदि सभी सदा भक्तिपूर्वक उपासना करते हैं, यही धर्म स्वर्ग और मोक्ष का देने वाला है। इसलिए यदि तुम्हें श्रेष्ठ सुख की चाह है तो तुम भी इसी धर्म का आश्रय लो ॥१२-१८॥

३६. पाराशर मुनि की कथा

जिनेन्द्र भगवान् को नमस्कार कर अन्यमतों की असत्य कल्पनाओं का सत्पुरुषों को ज्ञान हो, इसलिए उन्हीं के शास्त्रों में लिखी हुई पाराशर नामक एक तपस्वी की कथा यहाँ लिखी जाती है ॥१॥

हस्तिनापुर में गंगभट नाम का एक धीवर रहा करता था। एक दिन वह पाप-बुद्धि एक बड़ी भारी मछली को नदी से पकड़कर लाया। घर लाकर उस मछली को जब उसने चीरा तो उसमें से एक सुन्दर कन्या निकली। उसके शरीर से बड़ी दुर्गन्ध निकल रही थी। उस धीवर ने उसका नाम सत्यवती रखा। वही उसका पालन-पोषण भी करने लगा। पर सच पूछो तो यह बात सर्वथा-असंभव है। कही

गंगातीरे च तां कन्यां सनावं सोपि धीवरः। धृत्वा गंगभटो गेहं गतश्चैकदिने मुदा ॥५॥
 ततो ग्राम्यमुनिस्तत्र नाम्ना पाराशरः कुधीः। मार्गश्रान्तः समागत्य नद्यास्तीरे निजेच्छया ॥६॥
 गन्तुं नदीं समुत्तीर्य तां जगाद सुकन्यकाम्। एहि मां नय भो कन्ये नद्याः पारं मनोहरम् ॥७॥
 तयागत्य तदा शीघ्रं नौ मध्येऽसौ धृतः मुखम्। नीयमानः पुनः प्राह दृष्ट्वा तद्रूपमद्भुतम् ॥८॥
 मामिच्छेति समाकर्ण्य कन्या सत्यवती जगौ। दुर्जातिर्दुष्टगन्धाहं कथं स्पर्शं करोमि ते ॥९॥
 त्वं तपस्वी सदा गंगानदीस्नानविधायकः। शापानुग्रहसंयुक्तो बिभेमीति स्वचेतसि ॥१०॥
 ततस्तस्याश्च दुर्गन्धं स्फेटयित्वा स्वविद्यया। सुगन्धकुसुमामोदं स चक्रे तच्छरीरकम् ॥११॥
 तथा प्रोक्तमहो स्वामिँल्लोकाः पश्यन्ति सर्वतः। तदासौ धूमरीं कृत्वा नौ मध्ये कामलम्पटः ॥१२॥
 द्वीपं तत्र विधायोच्चैः परिणीय च तां पुनः। कामसेवां तथा साद्धं यावत्पाराशरो व्यधात् ॥१३॥

मछली से भी कन्या पैदा हुई? खेद है कि लोग आँख बन्द किए ऐसी-ऐसी बातों पर भी अन्धश्रद्धा किए चले आते हैं ॥२-४॥

जब सत्यवती बड़ी हो गई तो एक दिन की बात है कि गंगभट सत्यवती को नदी किनारे नाव पर बैठाकर आप किसी काम के लिए घर पर आ गया। इतने में रास्ते का थका हुआ एक पाराशर नाम का मुनि, जहाँ सत्यवती नाव लिए बैठी हुई थी, वहाँ आया। वह सत्यवती से बोला-लड़की मुझे नदी के उस पार जाना है, तू अपनी नाव पर बैठाकर नदी के पार उतार दे तो बहुत अच्छा हो। भोली सत्यवती ने उसका कहा मान लिया और नाव में उसे अच्छी तरह बैठाकर वह नाव खेने लगी। सत्यवती खूबसूरत तो थी ही और इस पर वह अब तेरह चौदह वर्ष की हो चुकी थी; इसलिए उसकी खिलती हुई नई जवानी थी। उसकी मनोहारी मधुर सुन्दरता ने तपस्वी के तप को डगमगा दिया। वह काम वासना का गुलाम हुआ। उसने अपनी पापमयी मनोवृत्ति को सत्यवती पर प्रकट किया। सत्यवती सुनकर लजा गई, और डरी भी। वह बोली-महाराज, आप साधु-सन्त, सदा गंगास्नान करने वाले और शाप देने तथा दया करने में समर्थ और मैं नीच जाति की लड़की, इस पर भी मेरा शरीर दुर्गन्धमय, फिर मैं आप सरीखों के योग्य कैसे हो सकती हूँ? पाराशर को इस भोली लड़की के निष्कपट हृदय की बात पर भी कुछ शर्म नहीं आई और कामियों को शर्म होती भी कहाँ? उसने सत्यवती से कहा-तू इसकी कुछ चिन्ता न कर। मैं तेरा शरीर अभी सुगन्धमय बनाये देता हूँ। यह कहकर पाराशर ने अपने विद्याबल से उसके शरीर को देखते-देखते सुगन्धमय कर दिया। उसके प्रभाव को देखकर सत्यवती को राजी हो जाना पड़ा। कामी पाराशर ने अपनी वासना नाव में ही मिटाना चाही, तब सत्यवती बोली-आपको इसका ख्याल नहीं कि सब लोग देखकर क्या कहेंगे? तब पाराशर ने आकाश को धुँधला कर, जिससे कोई देख न सके और अपनी इच्छा इसके बाद उसने नदी के बीच में एक छोटा-सा गाँव बसाया और सत्यवती के साथ ब्याह कर आप वहीं रहने लगा ॥५-१२॥

एक दिन पाराशर अपनी वासनाओं की तृप्ति कर रहा था कि उस समय सत्यवती के एक

तत्क्षणे पञ्चकूर्चादिर्जटायज्ञोपवीतभीक् । व्यासनामाऽभवत्पुत्रः पितुश्चक्रेभिवादनम् ॥१४॥
लौकिकं लपितं चेति मत्तचेष्टा समानकम् । कस्य चित्ते समायाति सदृष्टेर्ज्ञानचक्षुषः ॥१५॥
इत्थं मत्तजनप्रजल्पितमिमं भक्त्या कुवादीरितं विद्वद्भिर्जिनतत्त्वसारनिपुणैः सार्द्धं सदा संगतिम् ।
कृत्वा श्रीजिनधर्मकर्मणि रता भूत्वा स्वयं भक्तितो नित्यं शास्त्रमहाशुभे शुचिमतिं कुर्वन्तु सन्तः श्रिये ॥१६॥

इति कथाकोशे पाराशरस्य लौकिकी कथा समाप्ता ।

३७. सात्यकिरुद्रयोः कथा

श्रीजिनं केवलज्ञानलोचनं सम्प्रणम्य च । वक्ष्येऽहं पूर्वसूत्रेण कथां सात्यकिरुद्रयोः ॥१॥
गन्धारविषये रम्ये महेश्वरपुरेऽभवत् । राजा सत्यन्धरस्तस्य राज्ञी सत्यवती मता ॥२॥
तयोः सात्यकिनामाभूत्पुत्रो राजकलान्वितः । राजविद्यां विना राजा राजते नैव भूतले ॥३॥
सिन्धुदेशे विशालाख्यपत्तने चेटको नृपः । श्रीमज्जिनेन्द्रपादाब्जसेवनैकमधुव्रतः ॥४॥
तस्य राज्ञी सुभद्राऽभूत्सती व्रतमतल्लिका । पुत्र्यस्तयोः समुत्पन्नाः सप्त सद्रूपमण्डिताः ॥५॥
तासामाद्याभवत्पुत्री पवित्रा प्रियकारिणी । मृगावती द्वितीया च तृतीया सुप्रभा मता ॥६॥
प्रभावती चतुर्थी च पञ्चमी चेलिनी शुभा । ज्येष्ठा षष्ठी बुधैः प्रोक्ता सप्तमी चन्दना सती ॥७॥

व्यास नाम का पुत्र हुआ । उसके सिर पर जटाएँ थीं, वह यज्ञोपवीत पहने हुआ था और उससे उत्पन्न होते ही अपने पिता को नमस्कार किया । पर लोगों का यह कहना उन्मत्त पुरुष के सरीखा है और न किसी ज्ञान-नेत्र वाले की समझ में ये बातें आवेंगी ही क्योंकि वे समझते हैं कि समझदार कभी ऐसी असंभव बातें नहीं कहते किन्तु भक्ति के आवेश में आकर अतत्त्व पर विश्वास लाने वालों ने ऐसा लिख दिया है । इसलिए बुद्धिमानों को उचित है कि वे उन विद्वानों की संगति करें जो जैनधर्म का रहस्य समझने वाले हैं और जैनधर्म से ही प्रेम करें और उसी के शास्त्रों का भक्ति और श्रद्धा के साथ अध्ययन करें, उनमें पवित्र बुद्धि को लगावें, इसी से उन्हें सच्चा सुख प्राप्त होगा ॥१३-१६॥

३७. सात्यकि और रुद्र की कथा

केवलज्ञान ही जिनका नेत्र है, ऐसे जिनभगवान् को नमस्कार कर शास्त्रों के अनुसार सात्यकि और रुद्र की कथा लिखी जाती है ॥१॥

गन्धार देश में महेश्वरपुर एक सुन्दर शहर था । उसके राजा सत्यन्धर थे । सत्यन्धर की प्रिया का नाम सत्यवती था । इनके एक पुत्र हुआ उसका नाम सात्यकि था । सात्यकि ने राजविद्या में अच्छी कुशलता प्राप्त की थी और ठीक भी है, राजा बिना राजविद्या के शोभा भी नहीं पाता ॥२-३॥

इस समय सिन्धुदेश की विशाला नगरी का राजा चेटक था । चेटक जैनधर्म का पालक और जिनेन्द्र भगवान् का सच्चा भक्त था, इसकी रानी का नाम सुभद्रा था । सुभद्रा बड़ी पतिव्रता और धर्मात्मा थी । इसके सात कन्याएँ थी । उनके नाम थे-पवित्रता, मृगावती, सुप्रभा, प्रभावती, चेलना, ज्येष्ठा और चन्दना ॥४-७॥